खाद एवं उर्वरक :

शतावर की अच्छी फसल के लिए गोबर की खाद पौध प्रतिरोपण से पहले 25 टन प्रति हैक्टेयर की दर से खेत में मिला देनी चाहिए।

सिंचाई एवं गुड़ाई :

इसकी फसल के लिए अधिक सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है परन्तु शुरुआत में पोधे लगाने पर सप्ताह में दो बार और जब पोधे बड़े हो जाएं तो महीने में दो बार सिंचाई करनी चाहिए । समय –समय पर निराई एवं गुड़ाई करना बहुत आवश्यक है जिससे जड़ों की अधिक पैदावार होती है।

रोग एवं कीट :

इस फसल में रोग एवं कीटों का बहुत कम प्रकोप देखा गया है।

फसल की कटाई एवं रखरखाव :

पौध रोपण के 12 से 18 माह के पश्चात् शरद ऋतु में जब पौधा पीला पड़ने लगे तब इसकी जड़ों की खुदाई कर लेनी चाहिए। जड़ों को खुदाई के पश्चात् पानी से अच्छी तरह धो लेना चाहिए जिससे जड़ों में मिट्टी न रहे। इसके बाद जड़ों का ऊपरी छिलका व बीच का रेशा निकाल लेना चाहिए। तत्पश्चात् इसे हल्की धूप में नमी रहित स्थान पर सुखाना चाहिए। इन जड़ों को नमी रहित डिब्बों में एकत्रित करना चाहिए।

उपज:

जड़ों की खुदाई 18 माह पश्चात् करते हैं। ताजा जडों की उपज लगभग 130–160 क्विंटल प्रति हैक्टेयर तक आती है तथा सुखाने के बाद यह लगभग 18–19 क्विंटल रह जाती है।

अधिक जानकारी हेतू इस पते पर संम्पर्क करें:–

मुख्य परियोजना निदेशक

JICA सहायता प्राप्त

'हिमाचल प्रदेश वन पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन एवं आजीविका सुधार परियोजना'

पॉटरस हिल, समरहिल, शिमला–5 हिमाचल प्रदेश

दूरभाषः 0177–2832217

ई–मेलः cpdjica2018hpfd@gmail.com, himjadibuticell@gmail.com

शतावरी

(*Asparagus racemosus*)

वानस्पतिक नाम : एसपेरागस रेसीमोस्स

कुल : लिलिएसी (स्पसपंबमंम)

प्रचलित नाम : भातावरी, शतमूली, संसपाई

यह पौधा एशिया, अफीका, ऑस्ट्रेलिया आदि में पाया जाता है। भारत में यह मध्यप्रदेश के साल व मिश्रित वनों तथा हिमालय के क्षेत्रों में 1500 मी. की उंचाई तक पाया जाता है।

भातावर का पौधा 90–150 सें.मी. ऊँचा होता है। यह लता के समान बढता है। इसकी भाखाएं पतली व पत्ते बारिक सुई के समान होते हैं। इसके फूल गुच्छों में लगते हैं तथा फल छोटे – छोटे गोलाकार होते हैं जो पकने पर लाल रंग के हो जाते हैं। इसके बीज काले रंग के होते हैं। इसकी जड़ें लम्बी –लम्बी गुच्छों में होती हैं । इसकी जड़ों को औषधीय रूप में उपयोग किया जाता है।

रासायनिक तत्व :

इसकी जड़ों में सतावरिन I व सतावरिन IV रासायन पाये जाते हैं। सतावरिन I, सरसासैपोजेनिन का ग्लूकोसाईड है जिसमें 3 ग्लुकोस व एक रेमनास शूगर के अणु पाए जाते हैं तथा सतावरिन IV में दो ग्लुकोस व एक रेमनास के अणु पाए जाते हैं ।

औषधीय महत्त्व :

शतावर की जड़ें मधुर, रसयुक्त होती हैं। यह बलवर्धक, जठराग्निवर्धक, स्निग्ध, नेत्रों के लिए हितकर, शुक्रवर्धक, दूध बढ़ाने वाली, बलकारक, अनीमिया, भवेत प्रदर, भूख न लगने व पाचन सुधारने हेतू टॉनिक के रूप में उपयोग की जाती हैं।

जलवायु एवं मृदा :

शतावर की खेती के लिए उष्ण– आर्द जलवायु उत्तम होती है। इसकी खेती के लिए बालुई दोमट मिट्टी जिसमें जल निकास अच्छी तरह होता है, उपयुक्त होती है ।

भूमि की तैयारी :

इसकी खेती के लिए भूमि में दो–तीन बार हल चलाना चाहिए तत्पश्चात् 15 टन प्रति हैक्टेयर की मात्रा में गली–सड़ी गोबर की खाद मिलानी चाहिए। इसके बाद एक बार फिर से जुताई करके पाटा चला देना चाहिए ।

बिजाई का समय :

बीज की बुआई मई–जून माह में करनी चाहिए। 1. 5–2.0 किग्रा. बीज एक हैक्टेयर भूमि के लिए उपयुक्त होते हैं। बीजों को रेत में छनी हुई मिट्टी में मिलाकर बिजाई करनी चाहिए । बिजाई के तुरन्त पश्चात् सिंचाई करनी चाहिए। बीजों का अंकुरण 25–30 दिनों के बीच हो जाता है। जब पौधे 8–10 सें.मी. लम्बे हो जाएं तब इन्हें 60X60 सें.मी. की दूरी पर लगा देना चाहिए । यह एक बेल की तरह का पौधा है इसलिए इसे सहारे की आवश्यकता होती है ।